Krishnagar Academy
Subject - 2nd Lang. Hindi
class - XII

भक्तिन

सारांश - भक्तिन नामक कहानी में भक्तिन मुख्य मुख्य किरदार है जिसकी जिवन गाथा एक बार पढ़ने बैठो तो पूरा खत्म करके ही उठना पड़ेगा। भक्तिन महादेवी वर्मा जी की सेविका थी। जब महादेवी जी उससे पहले उसका वृत्तांत सुनना चाहती तो वह बताती की उसका असली नाम लक्ष्मी है। लेकिन अपने खोटे किस्मत के कारण वह किसी को अपना वास्तविक नाम बताना नही चाहती। सौतेली माँ ने उसे पाँच वर्ष की उम्र में ही विवाह करवाया तथा नौ वर्ष की अवस्था में गौना करवाकर ससुराल भेज दिया। तीन बेटियों को जन्म देने वाली भक्तिन अपने सास जेठानियों की उपेक्षा की पात्र बन गई। क्योंकि उन्होने लड़के जने तो वे आराम फरमाती और वह घर का और खेतों का सारा काम करती। पर भक्तिन अपने पति से बहुत प्रेम पाती इसी के स्नेह के बल पर वह ससुराल वालों को अलगौझा कर अपना अलग घर बसा लिया। सुख के थोड़े ही दिन बिताए कि उसकी पति की मृत्यु से वह अल्पायु में ही दुर्भाग्य ने उसे घेर लिया। ससुराल वाले उसकी दूसरी शादी करवाकर उसकी सारी सम्पत्ती हथियाने की साजिश रच रहे थे तो इससे बचने के लिए स्वाभिमानी, कर्मठ, संघर्षशील तथा दृढ संकल्पी भक्तिन ने अपना सिर मुड़वाकर सन्यासिनी बन गई। दुर्भाग्य ने उसका पीछा नही छोड़ा या बड़ा दामाद व बेटी जो उसी के साथ रहते थे कि अचानक दामाद की मृत्यु हो जाती है

भक्तिन के जेठ-जिठौत साजिश रचकर अपने तीतर बाज़ से उसकी विधवा बेटी का विवाह जबरदस्ती करवा देते है यह सम्बंध पंचायत द्वारा निर्णय लेने पर किया गया था जो आखिरकार दुखद ही रहा। भक्तिन और उसकी बेटी का मन घर-गृहस्थी से उचट गया। इतने मेहनत मशक्कत से बनायी सम्पत्ती, अब हाथ से निकलती जा रही थी, निर्धनता आ गया, लगान न चुका पाने के कारण जमींदार भक्तिन को दिन-भर धूप में खड़ा रखा। अपमानित भक्तिन पैसा कमाने के लिए शहर में महादेवी वर्मा जी के पास उनकी सेविका के रूप में आई।

भक्तिन के मन में महादेवी जी के प्रति आदर, सम्मान तथा अभिभावक के समान अधिकार भाव थे। वह छाया के समान उनके साथ रहती। वह रात-रात भर जागकर उनके चित्रकारी तथा लेखन मे अपने मालकिन की सेवा के अवसर ढूंढती। भक्तिन को महादेवी वर्मा नहीं बदल पाई परन्तु भक्तिन ने महादेवी को बदल दिया अपने हाथ का मोटी-मोटी रोटी खिलाकर महादेवी जी का स्वाद ही बदल दिया। अपने देहात के किस्से, कहानियाँ कहकर कंठस्थ करा दिए थे। लेकिन महादेवी जी उसके पोपले मुँह में एक भी रसगुल्ला न डाल सकी थी भक्तिन महादेवी जी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका थी जो ऊबड़ खाबड़ रास्ते में पहले स्वयं चलकर पीछे-पीछे महादेवी को आने को कहती और धूल भरे रास्ते में स्वयं महादेवी के पीछे चलती ताकि उसकी मालकिन को कष्ट न पहुँचे। ऐसे सेविका का वो कभी खोना नहीं चाहती थी